तीर्थरक्षक श्री भोमिया जी देव

बनारस के राजा महसेन का राजदरबार लगा है। राजा के पास ही महारानी तथा युवराज कुमार सिंहासन पर बैठे हैं। एक तरफ मंत्री तथा अन्य अधिकारी बैठे हैं। नगर के पाँच प्रमुख श्रेष्ठी राजा के दरबार में उपहार लेकर आते हैं—

तभी राजा महसेन बोले—
युवराज ! क्या तुम्हें मालूम है कि हम जिस गौरवशाली पवित्र वंश में उत्पन्न हुए हैं। उसी में भगवान पार्श्वनाथ का जन्म हुआ था।

युवराज ने उठकर श्रद्धापूर्वक वन्दना करते हुए कहा—
हम कितने भाग्यशाली हैं ! उस महापुरुष भगवान के वंश में जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। धन्य है मेरा जीवन।

फिर हाथ ऊपर जोड़कर—
हे प्रभु ! क्या मुझे भी इस जीवन में आपकी वन्दना करने का पुण्य अवसर मिलेगा ? क्या मैं भी इतना भाग्यशाली हूँ ?

श्रेष्ठी अहोभावपूर्वक बोले—
युवराज ! आपकी इतनी भावना है तो क्यों न आप भी इस समूह में साथ चलें। एक पंथ दो काज ! निर्वाणभूमि की वन्दना भी होगी और हमें आपका योग्य साथ मिलेगा।
हाँ, हाँ ! क्यों नहीं ! युवराज, आप भी परमात्मा की वन्दना करने जाइए। बड़ा आनन्द आयेगा।

महारानी वशोमती ने कहा—

महाराज ! आपकी आज्ञा हो तो मेरी भी भावना है प्रभु पार्श्वनाथ की वन्दना करने की।

महारानी ! इस शुभ कार्य के लिए हमारी आज्ञा क्यों न होगी ? परिवार के जो भी सदस्य जाना चाहें, आप सबको साथ लेकर परमात्मा पार्श्वनाथ की वन्दना करने अवश्य जाइये।

राजा ने दंड अधिकारी को आदेश दिया—

राजपरिवार की यात्रा की व्यवस्था करो। अच्छे घुड़सवार और सुरक्षाकर्मी साथ भेजना। मार्ग में लम्बी अटवी और अनार्य प्रदेश पड़ता है। इसलिए सब प्रबन्ध करके चलें।

शुभ मुहुर्त में महारानी, युवराज चन्द्रशेखर, युवरानी आदि राजपरिवार ने अनेक सुरक्षा कर्मियों को लेकर श्रावक संघ के साथ यात्रा के लिए प्रस्थान किया।

जय बोलो भगवान पार्श्वनाथ की !